प्रभु-मिलन के 75 वर्ष

ब्र.कु.सूर्य...

कहां एक ओर प्रभु-मिलन की तीव्र तड़पन, उसके लिए सर्वस्व त्याग, जंगलों की भटकन, मंदिरों के फेरे, कठिन तपस्याएं और कहां प्रभु की छत्रछाया में पलता जीवन, उसके प्यार में संजोया मन, उनकी शीतल वाणी से हिलोरे लेता तन और उनकी परम पावन दृष्टि से निखरता जीवन!! कहां वे संन्यासी जो केवल उपाधियों के नशे में चूर, ईश्वरीय आनन्दों से दूर, परम शांति के प्यासे और कहां वे ब्रह्मावत्स जो प्रभु के दिव्य कर्त्तव्यों को देख-देखकर ईश्वरीय रसों से ओत-प्रोत!!! कहां वे शास्त्रार्थ महारथी जो अपनी विद्वता के अहं के कारण सत्य से दूर और कहां वे भगवान के बच्चे, 'सत्य' जिनका जीवन बन गया।

कितना महान आश्चर्य... एक ओर खोज व अप्राप्ति, दूसरी ओर मिलन और सर्वस्व प्राप्ति। मिलन भी एक दो क्षण का नहीं, एक-दो दिन का नहीं, पूरे 75 वर्ष का। शायद यह सत्य, उनको तो कल्पना लगे जो क्षणिक प्रभु-दर्शन को भी अत्यंत कठिन मान रहे हैं। उनका सोचना भी सत्य है क्योंकि जब तक प्रभु स्वयं प्रत्यक्ष न हो, न कोई उसे पूर्णत: जान सकता और न ही कोई मिलन का आनन्द पा सकता।

प्रभु इस धरा पर अपने ब्रह्मलोक से अवतरित हुए, अपना दिव्य कर्त्तव्य करने के लिए और उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ठ होकर सत्य ज्ञान देकर मनुष्य को पावनता की राह पर अग्रसर किया। जिन्होंने उन्हें पहचाना, उनसे नाता जोड़ा और माया से मुख मोड़ा, वे उनके हो गये और बाकी उन्हें न पहचानकर अब तक भी भटक ही रहे हैं।

प्रसिद्ध है कि प्रभु मिलन, जन्म-जन्म की भक्ति, तपस्या व पुण्यकर्मों के बाद ही होता है। तो जिन्होंने अपनी भक्ति पूर्ण कर ली, उन्हें भगवान मिल गये। कलियुग के अंतिम काल में इस संगमयुग पर वे आत्माएं कितनी महान है जो 75 वर्ष से ईश-मिलन का सर्वोच्च परम आनन्द ग्रहण करती आ रही हैं। यद्यपि 'परम आनन्द' की अनुभूतियों को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। इसके रस को तो केवल अनुभवी ही जानें, तथापि उन अनुभवों को हम शब्दों में बांधने का प्रयास करेंगे। यों तो इन पिछले 75 वर्षों में (1936-2012 तक) जो भी आत्माएं भगवान के साथ रहीं उनमें से सभी ने अपनी-अपनी क्षमता अनुसार भिन्न-भिन्न अनुभव किये। परंतु उन सभी के अनुभवों का यहां हम सामूहिक रूप से जिक्र करेंगे। जन्म-जन्म भक्ति करते हुए, जिसने जो कुछ भगवान से मांगा था, भगवान ने आकर उन सभी की इच्छाएं पूर्ण की।

किसी ने कहा था - हे भगवन्, आप जब इस धरा पर आओ, हमें अपना वत्स बना लेना। उनकी इच्छा पूर्ण हुई।

किसी ने कहा था - हे प्रभु, जब आप इस धरा पर आओ, हमें भी सूचित करना, हम तो आपके पास ही रहेंगे। बस हमें और कुछ नहीं चाहिए। भगवान ने उन्हें इस नरक से निकाल कर अपनी छत्रछाया में ले लिया।

किसी ने कहा था - हे परमपिता, जब आप आओ हमें सम्पूर्ण सत्य ज्ञान देना। हम आपसे सम्मुख गीता-ज्ञान सुनना चाहते हैं। उन्हें भी तथास्तु का वरदान मिला। उन्होंने सम्मुख बैठकर श्रीमुख से गीता-ज्ञान सुना।

किसी ने कहा था - जब भी आप आओगे, हम आप पर बलिहार होंगे। अर्जुन की तरह आपको अपना सखा बनाकर आपके साथ ही खेलेंगे और खायेंगे, उनकी भी इच्छा पूर्ण हुई।

परंतु ध्यान रहे, भगवान निराकार है अर्थात देह रहित व जन्म-मरण से न्यारे हैं। अत: वे देहधारी नहीं बने परन्तु वे ब्रह्मा-तन द्वारा मुख्य 3 रूप से प्रत्यक्ष हुए। परमपिता,

परम शिक्षक व परम सद्गुरु। तो कोई उनका बच्चा ज्ञान सुनकर सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त हुआ, किसी ने उनसे सद्गुरु रूप में मुक्ति व जीवनमुक्ति का वरदान प्राप्त किया।

ईश्वर-मिलन के कुछ अनुभव

- जो उनके बच्चे बने, वे माया से बच गये - प्रभु-मिलन का यही प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उनके बच्चे बनते ही आत्मा इतनी शक्तिशाली हो गई, जो अजेय माया को परास्त कर सकी। कलियुग के मायावी प्रवाह को तोड़कर, वे पावनता की दिव्य राह पर चल पड़ी। उन्होंने अपने मन, वचन व कर्म को सम्पूर्ण पावन करने की प्रतिज्ञा कर ली। जैसे कि सर्वशक्तिवान ने अपने बच्चों के ऊपर छत्रछाया लगा दी जिसमें माया प्रवेश करने का साहस न कर सकी। जबकि कलियुग में चारों ओर माया की अग्नि दहक रही है, ये प्रभु-मिलन में मग्न आत्माएं उसकी आँच से भी मुक्त रहीं।

भगवान के वत्स मानो कलियुग में नहीं रहते - जबसे इन महान पुण्य-आत्माओं को भगवान मिले, कलियुग इनके लिए तो मानो समाप्त हो गया। ये कलियुग में कमल समान निर्लिप्त रहते हैं। ये आत्माएं कलियुग में रही भी कहां, ये तो अपने परमप्रिय प्रभु के ही साथ रहे। कल्पना करो, कितना सुखद है - प्रभु के संग रहना। जिसके बाद किसी अन्य के संग रहना अच्छा नहीं लगता। अन्य कहीं भी सुख व संतोष नहीं मिलता। प्रभु-मिलन होने पर ये महान विभूतियां कलियुग के दु:खों, अशांति, तनाव व दूषित जीवन से ऊपर रहते आये हैं।

इन्होंने भगवान से सम्मुख गीता ज्ञान सुना - लोग वेदों में सत्य ढूंढ़ रहे हैं, भगवत रामायण सुन सुनकर प्रसन्न हो रहे हैं और इधर 75 वर्षों से ब्रह्मा-वत्स, ज्ञान सागर परमात्मा के सम्पूर्ण ज्ञान-अमृत द्वारा अमरत्व को प्राप्त कर रहे हैं। सत्य को ढूंढ़ा नहीं जा सकता, सत्य तो परम सत्य के पास ही है। और वही परमशिक्षक बनकर सत्य ज्ञान सुनाते हैं। इसलिए सम्मुख भगवान से गीता-ज्ञान सुनने वालों को शास्त्रों की भला क्या आवश्यकता। परमात्मा की वाणी सम्मुख सुनकर आत्मा को जो संतोष होता है, वह शस्त्रवाणी सुनकर नहीं होता। ईश्वरीय महावाक्य सुनकर जिस अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है, वह कठिन तपस्याओं के द्वारा नहीं होती। ज्ञान की मधुर मुरली की तान पर रोम-रोम खिल उठता है, भटकन समाप्त हो जाती है और मन गा उठता है - ''पाना था सो पा लिया''।

इन्होंने 75 वर्षों तक परमात्मा का प्यार पाया - भगवान प्यार का सागर है। भक्त गाते हैं, परन्तु इसका अनुभव? अनुभव किया विश्व से चुनी हुई कुछ आत्माओं ने। भक्त तो भगवान के प्यार में खो जाना चाहते हैं, परन्तु अनुभव तो यह है कि अब भगवान अपने वत्सों के प्यार में खोये देखे जाते है। प्यार के बंधन में बंधते उन्हें देखा गया। उनकी प्यार भरी नजरों में पूरे 5000 वर्ष का प्यार समाया रहता है। जिन्होंने उनका प्यार पाया, वे धन्य-धन्य हो गये और उनके प्यार में इतने लीन हो गये कि मानो आत्मा परमात्मा में लीन हो गई हो। 75 वर्षों के ईश्वरीय प्यार को शब्दों में बांधना सम्भव नहीं। वही जानें जो इस विशुद्ध प्रेम में संसार भुला बैठे और अब भी इसी प्यार में अपना सर्वस्व कुर्बान कर रहे हैं। इस ईश्वरीय प्यार की चर्चा में तो अनेक ग्रंथ लिखे जा सकते हैं।

75 वर्षों तक प्रभु की मार्ग-दर्शना मिली - परमात्मा के दर्शन की तो कोई खास बात ही नहीं, इन्हें तो प्रत्येक कदम पर ईश्वरीय मत प्राप्त हुई। जिस प्रभु से मिलने को तड़पते थे, उनके इतने समीप आ गये कि वह प्रतिपल मार्ग-प्रदर्शक बना गये। परिणामत: प्रत्येक कर्म दिव्य बन गया। आत्मा के पाप घुलने लगे और पापकर्म बंद हो गये। कदम सफलता की ओर चल पड़े। मनुष्य अच्छी राय पाने के लिए भी उत्सुक रहते हैं और यहां तो स्वयं भगवान ने सर्वश्रेष्ठ राय दी।

75 वर्षों में वरदानों से झोली भरी - भक्ति में भक्त देवियों से वरदान मांगने जाते हैं, घोर तपस्या करते हैं, ब्रह्मचर्य अपनाते हैं। परन्तु देवियों ने वरदान कब व कहां से प्राप्त किये? पुरुषोत्तम संगमयुग पर वरदाता भगवान से। यही वे प्रसिद्ध शक्तियां हैं। इनका ये स्वरूप शीघ्र ही प्रसिद्ध होगा और भक्त चेतन रूप में अपनी-अपनी देवियों के दर्शन कर सकेंगे।

शेष भाग पृष्ठ 4 पर

बाडमेर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को 'ईश्वरीय संदेश' देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बबीता बहन।

मंगलोर। कर्नाटक के मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टार को ब्रह्माकुमारीज़ की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु.विश्वेश्वरी बहन एवं ब्र.कु.राजश्री बहन।

अमरेली। इंटरनेशनल माइंड ट्रेनर डॉ.जीतेन्द्र अढीया को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.किंजल बहन एवं ब्र.कु.तृप्ति बहन।

अडाजन, सुरत। 'वरिष्ठ नागरिकों' के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.दक्षा बहन।

कमला नगर, आगरा। मून टी.वी के निदेशक राहुल पालीवाल को 'ओम शांति मीडिया' भेंट करते हुए ब्र.कु.शशी बहन।

अमलनेर। राजयोग शिविर कार्यक्रम में एक्सरसाइज कराते हुए ब्र.कु.डॉ.प्रेम मसंद।